International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारतीय किसान की दशा
(गोदान के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. शिवदयाल पटेल
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय महाविद्यालय बरपाली, जिला- कोरबा (छत्तीसगढ़)

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है और भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी कृषि है। कृषि की उपज के माध्यम से देश का उदरपोषण करने वाला अन्नदाता किसान साहित्य में हाशिये पर रहा है। हिंदी साहित्य में व्यापक फलक पर किसान को केंद्र में रखकर रचना करने वाले प्रथम और श्रेष्ठ कथाकार हैं मुंशी प्रेमचंद । प्रेमचंद का लगभग पूरा साहित्य गाँव और किसान को केंद्र में रखकर लिखा गया। प्रेमचंद का अधिकांश साहित्य सामाजिक समस्याओं और उनके निराकरण के प्रयास पर आधारित है। समाज के बहुसंख्यक वर्ग यानी किसान और उनकी जीवन-शैली, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार आदि का वर्णन उनके साहित्य में समग्र रूप में उपलब्ध है। उनकी कृति प्रेमाश्रम, कर्मभूमि और गोदान को किसान साहित्य का वृहत्त्रयी उपन्यास कहा जाता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद की रचनाधर्मिता के इस पक्ष को रेखांकित किया है-"हिंदी में किसानों की समस्याओं पर ज्यादा उपन्यास लिखे ही नहीं गए, जो लिखे भी गए हैं, उनमें प्रेमचंद की सूझ-बूझ का अभाव है।"1 किसान-जीवन के साथ तालमेल बनाते हुए प्रेमचंद ने जो रचा वह हिंदी के लिए एकदम नया था, उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ों किसानों के सीने में धड़क रही थी। 'प्रेमचंद और उनका युग' में रामविलास शर्मा लिखते हैं उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ों किसानों के दिल में हो रही थी। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा विषय बनाया, जिसे भरपूर निगाह देखने का हियाव ही बड़ों-बड़ों को न हुआ था।"2 " विविध रूप हैं, उनके शोषकों के गंठजोड़ हैं और साथ में है इस शोषण के विरुद्ध "इस अछूते यथार्थ में किसान हैं, उनके सुख-दुख हैं, उनके शोषण के किसान की क्रांति चेतना।"3 प्रेमचंद ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने भारतीय किसान की दयनीय दशा के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति ही नहीं, बेचैनी और चिंता भी व्यक्त की। उनका स्पष्ट मत था कि किसान की आर्थिक मुक्ति के बिना पूर्ण लक्ष्य को पूरा नहीं किया जा सकता। वे किसानों के महत्त्व व उनकी दयनीय दशा के सम्बन्ध में लिखते हैं- "भारत के अस्सी फीसदी आदमी खेती करते हैं। कई फीसदी वह हैं, जो अपनी जीविका के लिए किसानों के मुहताज हैं, बढ़ई, लुहार आदि। राष्ट्र के हाथ में जो कुछ विभूति है, वह इन्हीं किसानों और मजदूरों की मेहनत का सदका है। हमारे स्कूल और विद्यालय, हमारी पुलिस और फौज, हमारी अदालतें और कचहरियाँ सब इन्हीं की कमाई के बल पर चलती हैं, लेकिन वही जो राष्ट्र के अन्न और वस्त्रदाता हैं, भरपेट अन्न को तरसते हैं, जाड़े पाले में ठिठुरते हैं और मक्खियों की तरह मरते हैं। "4 प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किसानों के शोषण करने वाले सभी वर्गों की पहचान की है और उनके गठजोड़ का पर्दाफाश किया है। सिर्फ सामंत किसानों के शोषण के लिए उत्तरदायी नहीं हैं, बल्कि वह तो इस शोषण के तन्त्र का छोटा पुर्जा मात्र हैं। सामंत के अतिरिक्त महाजन, धार्मिक मठाधीश, पुलिस

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और प्रशासन सभी किसानों के शोषण में शामिल हैं। इनका नापाक गठजोड़ इस शोषण को इस कदर घातक बना देता है कि किसानों के पास इससे मुक्ति का कोई रास्ता नहीं बचता। प्रेमचंद साहित्य का अधिकांश किसान सीमांत किसान हैं-चार या पाँच बीघे की जोत वाले। फिर भी किसानी को मरजाद समझने वाले। किसानी उनके लिए सिर्फ जीविका ही नहीं, जीवन भी है। किसानी के मरजाद की रक्षा उनके लिए सबसे बड़ा प्रश्न है। इसी की रक्षा के लिए वे ऋणग्रस्तता के जाल में फँसते हैं। प्रेमचंद ने किसानों के शोषण में पूँजीवादी महाजनों की भूमिका को बखूबी रेखांकित किया है। गोदान के झिंगुरीसिंह, नोखेराम और दुलारी सहुआइन जैसे महाजन होरी जैसे किसानों के साथ जोंक की तरह चिपके हुए हैं। किसानों के पास उनसे छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है। वह जितना इनसे छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं, उतना ही उलझते जाते हैं, उनके हल-बैल, खेत सब कुछ कर्ज के भेंट चढ़ जाते हैं और आखिर में वह किसानी भी नहीं रहती, जिसे बचाने के लिए वे अपना सब कुछ लुटा देते हैं।

प्रेमचंद युगीन समाज में किसानों की सबसे बड़ी समस्या जमींदारी की थी। प्रेमचंद का मानना था कि जमींदारी प्रथा खत्म होने से ही किसान खुशहाल हो सकता है। किसान का अगर कोई सबसे बड़ा शत्रु है तो वह है जमींदार और उसके कारिंदे। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'प्रेमाश्रम' में इसी समस्या को उठाया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं-"इस उपन्यास में प्रेमचंद ने मुख्यत: किसानों और जमींदारों के प्रश्न को उठाया है। ग्रामीण जीवन से किसानों का कथानक लेते हुए प्रेमचंद ने गाँव के पटवारी, महाजन आदि का भी चित्र दे दिया है। जमींदारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने मुंशी और कारिंदे आदि के कारनामें भी लिख दिये हैं।"5, हिंदी साहित्य के इतिहास में 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। इसके ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं- "एक तो किसानों पर लिखना ही रसराज का अपमान करना था। उस पर किसी खास आदमी को नायक न बनाना और भी अनोखा प्रयोग था। प्रेमचंद ने पाप और पुण्य के राक्षस और देवता नहीं रचे। उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ों किसानों के दिल में हो रही थी। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा विषय बनाया जिसे भरपूर निगाह देखने का हियाब बड़ों-बड़ों को न था। 'प्रेमाश्रम' लिखना एक अद्भुत साहस का काम था। साहित्य का झंडा लिए हुए प्रेमचंद ऐसे मार्ग पर चल पड़े, जिसे पहले किसी ने तय नहीं किया था। उनकी प्रतिभा का यह प्रमाण है कि उन्होंने जो साहस किया वह दुस्साहस साबित नहीं हुआ।"" प्रेमचंद द्वारा सन् 1918 में लिखित 'प्रेमाश्रम' में किसान का पहला शोषक चपरासी गिरधर महाराज है। अधिकारियों के जब दौरे होते हैं, तब यही चपरासी गाँव का एकमात्र भाग्यविधाता बन जाता है। किसी की लकड़ियाँ, किसी का चारा, किसी का सामान उठा लाता है। किसानों का शोषण करने वाला दूसरा वर्ग जमींदार है। इस उपन्यास में लखनपुर का जमींदार गौस खां गाँव के बड़े किसानों को एकत्र कर अन्य किसानों पर अत्याचार करता है। प्रेमचंद ने अनुभव किया कि इस देश के मुट्ठी भर अंग्रेज शासकों ने शोषकों की एक विशाल फौज खड़ी कर ली है और उसके स्वार्थ की तलवार किसानों की गर्दन पर सीधी पड़ी हुई है।

'सेवासदन' उपन्यास प्रेमचंद की अद्भुत कृति है। इस उपन्यास में प्रेमचंद पुलिस, महंत और जमींदार का जो खाका उपस्थित करते हैं, उसे उन्होंने किसी न किसी रूप में अपनी अन्य कृतियों में भी चित्रित किया है। इसमें बताया गया है कि सुरक्षा के लिए जिम्मेवार पुलिस असुरक्षा को, नैतिकता का आदर्श मठाधीश पाप को और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किसानों के पोषक जमींदार शोषण को अपने जीवन का ध्येय बनाकर चलते हैं। कृषक वर्ग का उत्थान करने के स्थान पर जमींदार पुलिस, प्रशासन, नेतागण को अपने हाथों की कठपुतली बनाकर किसानों का शोषण करता है। प्रेमचंद की जमींदारों को सलाह है कि वह किसान की सहायता करें जो उनके अस्तित्व का एक प्रमुख कारण हैं अन्यथा किसान खत्म हो जाएगा। जिससे जमींदार का अस्तित्व समाप्त होना अवश्यंभावी है।

'रंगभूमि' उपन्यास में शहर और देहात का संघर्ष है। यह संघर्ष गाँव की चिरपुरातन सहकारी सभ्यता और आगत औद्योगिकीकरण के बीच है। रंगभूमि में भारतीय पूँजीवाद के शैशव का चित्रण है। इसमें पूँजीवाद अभी घुटनों के बल पर चल रहा है। उपन्यास के नायक सूरदास पास दस बीघे जमीन थी, जिस पर मोहल्ले की गाय, भैंसें चरती थीं, इस जमीन से उसे कोई आमदनी न थी। वह इसे मात्र इसलिए बचाये रखना चाहता है क्योंकि वह बाप-दादों की निशानी है। मि. जनसेवक उसकी जमीन छीनना चाहते हैं, भले ही शहर में उनके बड़े-बड़े बंगले हैं।

प्रेमचंद के 'कर्मभूमि' उपन्यास की रचना भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के उस दौर के समय हुई, जब राष्ट्र ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए प्राणों की बाजी लगा दी थी। 'कर्मभूमि' में किसानों के प्रश्न को लेकर भी एक आन्दोलन चला है। घोर आर्थिक संकट में पड़े हुए किसान अपने जमींदार महंत को लगान की रकम दे पाने के योग्य नहीं रह गए हैं। महंत के खिलाफ असामियों ने जो लगानबंदी का आन्दोलन चलाया है, उसके साथ भी सरकार का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तो नहीं है किंतु उसमें सरकार कहीं न कहीं आ ही जाती है। किसानों की माँग है कि भयानक मंदी को देखते हुए लगान में छूट दी जाए। महंत ने अमरकांत को बताया कि सरकार उनको जितनी मालगुजारी छोड़ देगी, वह भी 'किसानों को उतनी ही लगान छोड़ देगा। 'कर्मभूमि उपन्यास युग का यथार्थ चित्रण और युग के यथार्थ पर गहरा व्यंग्य है।

इसी के साथ ही प्रेमचंद ने विपुल कहानी साहित्य भी लिखा। 'बलिदान (1918) शीर्षक कहानी का नायक गिरधारी अपने पिता की मृत्यु के बाद जमींदार को उसकी इच्छानुकूल नजराना न दे पाने की स्थिति में खेत से हाथ धो बैठता है। 'विध्वंश' (1921) कहानी में नायिका भुनगी बेगार में जमींदार उदयभानु पांडेय का चना समय पर भून नहीं पाती तो वह उसे लात-घूंसे मारकर उसकी झोपड़ी में आग लगवा देता है, जिसमें कूदकर वह जान दे देती है।1924 में प्रेमचंद ने तीन महत्त्वपूर्ण कहानियाँ 'मुक्तिमार्ग', 'मुक्तिधन' और 'सवा सेर गेहूँ' लिखीं। 'मुक्तिमार्ग' में किसान का साधारण और वास्तविक जीवन चित्रित किया गया है। इस कहानी में किसान और किसान के सम्बन्ध हैं। इस कहानी में यह भी स्पष्ट किया है कि खेत पकने से किसान में गर्व पैदा होता है किंतु नष्ट होने से वह मुरझा जाता है। 'मुक्तिधन' कहानी में दिखाया गया है कि किसान के लिए खेती करना कितना कठिन होता जा रहा है। 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में "बीस वर्ष तक गुलामी करने के बाद जब शंकर मरता है तो सवा सेर गेहूँ के कर्ज में 120 रुपये उसके सिर पर सवार थे। जिसके भुगतान के लिए उसके जवान बेटे की गर्दन पकड़ी जाती है। कहानी के अंत में प्रेमचंद इस ओर भी अपने पाठकों को सचेत कर देते हैं कि यह कोई कपोल कल्पित कहानी नहीं, यह सत्य घटना है। ऐसे शंकरों और ऐसे विप्रो से दुनिया खाली नहीं।"7 प्रेमचंद ने 'पूस की रात' (1930) में किसान के यथाथ स्थिति का चित्रण किया है। इसकी पृष्ठभूमि में महामंदी की भूमिका है। कहानी में किसानों, विशेष रूप से, छोटे किसानों की तबाही की दास्तान है। "जाड़े के मौसम और सहना साहूकार के जुल्म की दोहरी मार के बीच छटपटाता हल्कू,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पूस के मौसम में रात को अपनी थोड़ी सी फसल की रक्षा के लिए खून जमा देने वाली ठंड में पहरा देने के लिए हल्कू को एक कंबल चाहिए। जिसे खरीदने के लिए उसकी पत्नी मुन्नी ने बमुश्किल तीन रुपये बचा के रखे पर सहना साहूकार की गाली और अपमान से बचने के लिए वह तीन रुपया उसे देने पड़ते हैं।"8

'कफन' ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कहानी है जो श्रम के प्रति आदमी में हतोत्साह पैदा करती है, क्योंकि उसे श्रम की कोई सार्थकता दिखाई नहीं देती। इसलिए घीसू और माधव को प्रसव वेदना से पछाड़ खा रही बुधिया के मरने-जीने से ज्यादा चिंता, चुराकर लाये हुए भूने आलू से पेट भरने की होती है। प्रेमचंद ने किसानों पर 'ज्योति', 'दूध का दाम' आदि कहानियाँ भी लिखी हैं। इनमें किसान परिवार की आंतरिक मूल्य व्यवस्था का चित्रण है और उनमें सामाजिक, धार्मिक शोषण की प्रक्रिया दिखाई गई है। अतः प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय ग्रामीण जीवन का महा-आख्यान हैं, जिसके जीवन का कोई कोना उनकी नजर से छूटा नहीं है।

'गोदान' (1936) महाकाव्यात्मक उपन्यास का नायक होरी है, जो खेतों में जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी अपने परिवार का भरण-पोषण बमुश्किल कर पाता है। होरी भारतीय समाज में व्याप्त सामंती और सूदखोरी जैसी कुव्यवस्थाओं का शिकार होता है। नजराना देने के बाद भी जब होरी रायसाहब के यहाँ बेगार करने जाता है, तो धनिया कड़े शब्दों में विरोध करती है। फिर भी सामाजिक परंपरा में बँधा होरी उसकी एक नहीं मानता। गोदान उपन्यास किसान जीवन की अंदरूनी तह को परत-दर-परत खोलता है, जहाँ कर्ज से पीड़ित किसान आजीवन ऋणग्रस्त होकर जीता है और मरने के बाद अपनी पीढ़ी को पैतृक संपत्ति के नाम पर जमींदार और साहूकार का ऋण सौंप जाता है।

प्रेमचंद का किसान आत्मसम्मान के प्रति सजग है, वह कठोर परिश्रम करते हुए इस मरजाद की रक्षा करता है। मरजाद के नाम पर वह किसी अन्याय का साथ भी नहीं देना चाहता तथा कुल मर्यादा के नाम पर हिंसा भी नहीं करता। होरी अपने पुत्र गोबर के प्रेम का सम्मान करते हुए गर्भवती झुनिया को अपने घर ले आता है। झुनिया विधवा है और गोबर की अविवाहित गर्भवती प्रेमिका भी है। होरी झुनिया का तिरस्कार नहीं करता। वह उसे परिवार की सदस्या घोषित करने का साहस करता है। होरी का यह कदम किसान-संस्कृति का एक उज्ज्वल पक्ष है। आज के समय में 'ऑनर किलिंग' के जो मामले ग्रामीण समाज में दिखाई पड़ रहे हैं, उनका सम्बन्ध किसान-संस्कृति से नहीं है। ये करतूतें कृषि को महज आय का जरिया बनाने वाले भू-स्वामियों की हैं। प्रेमचंद जिस किसान की पहचान लेकर आये थे, वे मेहनतकश, खेतिहर, सहृदय किसान थे। प्रसूता झुनिया को नवजात शिशु सहित घर से निकालने के लिए होरी और धनिया पर पंचों के द्वारा दबाव डाला जाता है, नहीं मानने पर पंचायत बैठाकर जुर्माना लिया जाता है। प्रेमचंद लिखते हैं-"होरी और धनिया, दोनों अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए बुलाये गये। चौपाल में इतनी भीड़ थी कि कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी। पंचायत ने फैसला लिया कि होरी पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज डाँड़ लगाया जाये। धनिया भरी सभा में रुंधे हुए कंठ से बोली-पंचों, गरीब को सताकर सुख न पाओगे, इतना समझ लेना। हम तो मिट जाएंगे, कौन जाने इस गाँव में रहें या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको भी जरूर लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीबाना इसलिए लिया जा रहा है कि मैंने अपनी बहू को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उसे घर से निकालकर सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया। यही न्याय है ऐं?"9

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'गोदान' का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। होरी उन तमाम गरीब किसानों की विशेषताएँ लिये हुए है जो जमींदारों और महाजनों की धीमे-धीमे लेकिन बिना रुके हुए चलने वाली चक्की में पिसा करते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में कहते हैं कि "गोदान की गति धीमी है, होरी की जीवन की गति की तरह। यहाँ सैलाब का वेग नहीं है, लहरों के थपेड़े नहीं हैं। यहाँ ऊपर से शांत दिखने वाली नदी के भँवरे हैं जो भीतर ही भीतर मनुष्य को डुबोकर तलहटी से लगाये देते हैं और दूसरों को तो वह तभी दिखाई देता है जब उसकी लाश ऊपर आती हुई बहने लगे।" 10 गोदान के होरी का जीवन इतना दयनीय है कि वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता। उसकी अनुकूल परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल हो गयी हैं। वह धनिया से कहता है-"जब दूसरे के पांव तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है।" 11

होरी शोषण का शिकार है। वह सामंती और पूँजीवादी व्यवस्था के सामने इतना मजबूर है कि उसका जीवन सामंतों के हाथ में न होकर पैरों में पड़ा है। एक किसान की जिंदगी कितनी सस्ती है? सामंतों के पैरों में पड़ी है। पैर हटाया तो जीवन गया और पड़ा रहा तो मर-मार कर जिंदगी चलती रहे। ऐसा मार्मिक कथन दिल में इतनी कचोट पैदा करता है कि जो किसान हमारा अन्नदाता है, हमारे जीवन का पोषी है, उसी की जिंदगी इतनी मजबूर और लाचार है। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि पराधीन भारत में पूरे देश का अंतिम बोझ किसान उठा रहा था। जमींदार और महाजन उसका शोषण अवश्य करते थे लेकिन उसे जिलाये रखते थे। होरी जब-जब आर्थिक संकट में फँसता है, महाजन उसे कर्ज देने के लिए पहुँच जाते हैं। प्रेमचंद लिखते हैं-"कर्ज वह मेहमान है, जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।"12 कर्ज में डूब जाने पर भी होरी आत्महत्या के बारे में नहीं सोचता, क्योंकि आत्महत्या भारतीय किसान और लोकजीवन की प्रवृत्ति नहीं रही है। सामंतवाद में व्यक्ति जातिगत भेदभाव, बेगार, बेदखली आदि के रूप में सामाजिक और आर्थिक शोषण में जरूर फँसा रहता है लेकिन उसके जीवन में उल्लास के तत्व बचे रहते हैं। जो जीवन के प्रति उसका विश्वास खत्म नहीं होने देते। प्रेमचंद ने 'गोदान' में होली के अवसर पर युवा टोली द्वारा किये गए स्वांग में साहूकार द्वारा किसानों के किये जाने वाले शोषण का बड़ा ही सटीक, व्यंगपूर्ण प्रसंग उद्धृत किया है- ठाकुर ने दस रुपये का दस्तावेज लिखकर पाँच रुपये दिये, शेष नजराने और तहरीर और दस्तूरी और ब्याज में काट लिये। जब कागज लिखा जाता है और आसामी के हाथ में पाँच रुपये रख दिये जाते हैं, तो वह चकराकर पूछता है-

'यह तो पाँच हैं मालिक!'

'पाँच नहीं, दस हैं। घर जाकर गिनना।'

'नहीं सरकार, पाँच हैं।'

'एक रुपया नजराने का हुआ कि नहीं?'

'हाँ, सरकार3 ।'

'एक कागद का?'

'हाँ, सरकार।'

'एक दस्तूरी का?

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'हाँ, सरकार।'

"एक सूद का ?'

'हाँ, सरकार।'

'पाँच नकद, दस हुए कि नहीं?'

'हाँ, सरकार! अब यह पाँचों भी मेरी ओर से रख लीजिए।'

'कैसा पागल है?'

'नहीं सरकार, एक रुपया छोटी ठकुराइन का नजराना है, एक रुपया बड़ी ठकुराइन का।

एक रुपया छोटी ठकुराइन के पान खाने को,

एक बड़ी ठकुराइन के पान खाने को।

बाकी बचा एक, वह आपके क्रिया-करम के लिए।" 13

अंतिम वाक्य में व्यंग्य और कटाक्ष का तीखापन गजब का है। प्रेमचंद किसानों के कष्टों द्रवित हो गए हैं कि वे अपनी उमड़ती हुई भावनाओं को ऐसी ही भयानकता से व्यक्त करते हैं। प्रेमचंद ने 'गोदान' में किसान की भुखमरी के रूप में न केवल मानव की गरीबी और पीड़ा को व्यक्त किया है अपितु किसान के परिवार के अभिन्न सदस्य बैल की पीड़ा के माध्यम से किसान की मानवेत्तर करुणा को अभिव्यक्ति दी है-"होरी ने दायें बैल की पीठ पर हाथ रखकर कहा-कैसा पाँचवां, यह आठवां चल रहा है भाई! जी तो चाहता है, इसे पिनसिन दे दूं, लेकिन किसान और किसान का बैल, इनको जमराज ही पिनसिन दें, तो मिले। इसकी गर्दन पर जुआ रखते मेरा मन कचोटता है। बेचारा सोचता होगा, अब भी छुट्टी नहीं, अब क्या मेरा हाड़ जोतेगा? लेकिन अपना कोई काबू नहीं।"14 पाँच बीघे का मालिक एक किसान अपने परिवार को सुखी नहीं रख पाता। ये किसान जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है। होरी व उसके परिवार के वस्त्राभाव को उजागर करते हुए प्रेमचंद ने लिखा है-"गोबर को उतनी देर में घर की परिस्थिति का अंदाज हो गया था। धनिया की साड़ी में कई पैबंद लगे हुए थे। सोना की साड़ी सिर पर फटी हुई थी और उसमें से उसके बाल दिखाई दे रहे थे। रूपा की धोती में चारों तरफ झालरें-सी लटक रही थीं। सभी के चेहरे रूखे, किसी की देह पर चिकनाहट नहीं। जिधर देखो विपन्नता का साम्राज्य था।" 15

कर्ज में डूबा किसान दिन पर दिन दरिद्र होता जाता है। उसे अपने खेत से बेदखल हो दूसरों के खेत में काम करना पड़ता है। यह किसान के मजदूर बनने की विवशता है। होरी दातादीन के साथ साझा कर खेत जोतता है। ऊख की फसल से थोड़ा बहुत भरोसा था। ऊख काटी ही जा रही थी कि सभी महाजन आ पहुँचे। इन्हीं ऊख की फसल से होरी बैलों की जोड़ी खरीदना चाहता था। पर अब फसल कटते ही महाजनों के पेट में चूहे दौड़ने लगे। इस प्रकार किसानों द्वारा अपनी उपज की रक्षा कर पाना असंभव है। किसान जीवन भर अपनी आस पूरी नहीं कर पाता है। होरी न बैलों की जोड़ी खरीद पाता है न किसान के द्वार की मरजाद गाय ही रख पाता है। होरी के मन में एक गाय पालने की उत्कट अभिलाषा थी, यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न, सबसे बड़ी साध थी, पर वह उसे पूरा नहीं कर पाता। वह गाय तो ले आता है, पर उसे रख पाने में असमर्थ है। डॉ. जनरेश्वर वर्मा लिखते हैं- "कृषक जीवन की यह कैसी विडंबना है कि आजीवन परिश्रम करने के बाद उसकी यह साध पूरी नहीं हो पाती। जो कुछ वह कमाता है,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उसका अधिकांश जमींदारों और महाजनों के पेट में चला जाता है। गाय के प्रसंग को लेकर प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से तत्कालीन कृषक समाज की आशाओं, आकांक्षाओं से लेकर निर्मम शोषण और आर्थिक विवशताओं तक यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत किया है।" 16

होरी अब किसान नहीं रह गया था, वह मजदूर हो चुका था। धनिया, सोना, रूपा भी उसी के साथ मजदूरी करती थीं। होरी के जीवन में अंधकार बढ़ता ही जा रहा था। उसके सिर और छाती का बोझ कम होने का नाम नहीं ले रहा था। वह जमीन से रमण करने वाला, जमीन की छाती चीर कर अन्न उगा देने वाला किसान, जीवन से युद्ध करते-करते पराजित हो जाता है। एक दिन होरी को लू लग जाती है और वह अपनी लालसा पूरी किये बिना ही मर जाता है। ब्राह्मण धनिया से कहता है कि वह गोदान करा दे। धनिया यन्त्रवत उठकर अंदर गई और सुतली बेचकर लाये गये बीस आने होरी के ठंडे हाथ पर रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-"महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही बीस एक आने हैं, यही इनका गोदान है। और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।" 17

निष्कर्ष : मुंशी प्रेमचंद जी हिंदी साहित्य में उपन्यास सम्राट और कहानी सम्राट की उपाधि से विभूषित किये जाते हैं। प्रेमचंद की अधिकांश कहानियाँ और उपन्यास ग्रामीण संस्कृति और कृषि संस्कृति से जुड़े हैं। भारत की बहुसंख्यक जनता कृषि कार्य पर आश्रित है, परंतु दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि ये भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ होने के बावजूद मुख्यधारा से कोसों दूर हैं, गरीब हैं, सीमांत हैं, जो अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति आजीवन कर पाने में अक्षम हैं। ऋणग्रस्तता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, धार्मिक अंधविश्वास के शिकार होने के साथ-साथ सर्वत्र शोषण के शिकार हैं। प्रेमचंद ने किसान की दशा का यथार्थवादी चित्रण किया है। गोदान में औपनिवेशिक शोषण से उत्पन्न सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का बारिकी से चित्रण किया गया है। शोषण के बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित करने में जितना सक्षम गोदान है, उतना शायद ही कोई अन्य उपन्यास हो ।औपनिवेशिक सरकार तथा बिचौलिया (जमींदारों व महाजनों) के संयुक्त शोषण से किसानों की जो त्रासदी हुई उस त्रासदी का जीवंत दस्तावेज गोदान में सुरक्षित है।

सन्दर्भ

1. रामविलास शर्मा-प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ 44
2. वही, पृष्ठ 44
3. वही, पृष्ठ 450
4. विजय बहादुर सिंह (संपादक) -प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन, नन्ददुलारे वाजपेयी रचनावली, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 12
5. वही, पृष्ठ 125
6. डॉ. रामबक्ष-प्रेमचंद और भारतीय किसान, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण,1982, पृष्ठ 55, 56
7. देवेंद्र दीपक, त्रिभुवननाथ शुक्ल (संपादक)-साक्षात्कार (मुंशी प्रेमचंद-पूस की रात), साहित्य अकादमी भोपाल, जुलाई 2015, पृष्ठ 15
8. प्रेमचंद गोदान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 5

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

9. प्रेमचंद-गोदान, मनोज पब्लिकेशन, चांदनी चौक दिल्ली, 2019, पृष्ठ 99,100
10. रामविलास शर्मा-प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ 97
11. प्रेमचंद गोदान, हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, नवीन संस्करण 1995, पृष्ठ 13
12. वही, पृष्ठ 106
13. प्रेमचंद गोदान, मनोज पब्लिकेशन, चांदनी चौक दिल्ली, 2019, पृष्ठ 169
14. वही, पृष्ठ 230
15. वही, पृष्ठ 161
16. डॉ. जनरेश्वर वर्मा-प्रेमचंद : एक मार्क्सवादी मूल्यांकन, ग्रंथ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1986, पृष्ठ 307
17. प्रेमचंद गोदान, मनोज पब्लिकेशन, चांदनी चौक दिल्ली, 2019, पृष्ठ 280